RESEARCH PAPER

RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
e-ISSN: 2349-7637 | Vol.09 | Iss.02 | February 2022 | pp. 55-58
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

National Consciousness in Bhojpuri Folk Literature
भोजपुरी लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना

*Dr Prashant Kumar Baudh

Assistant Professor, Shri Bhagwan Mahavir P.G. College, Pavanagar, Fazilnagar, Kushinagar

Abstract

Bhojpuri is the most widely spoken language of India. Its folk literature is equally extensive and inexhaustible. There is no consensus on its Bhojpuri nomenclature, but most scholars tell it to be related to 'Bhojpur' village of Ara (Bhojpur) division under the present Vihar province - 'Old Bhojpur' in Bhojpur pargana near Buxar in Shahabad district of Vihar province. There is a village called Now the name Bhojpur is used for the nearby villages named "New Bhojpur" and "Old Bhojpur". Although all the voices of consciousness are visible in Bhojpuri folk-literature, but in Bhojpuri folk-literature the distinctive color of the voices of national consciousness is visible.

Keywords: *Bhojpuri, folk-literature, national consciousness*

Abstract in Hindi Language:

भोजपुरी भारत की सर्वाधिक विस्तार वाली विभाषा है। इसका लोक साहित्य भी उतना ही विस्तृत और अगाध है। इसके भोजपुरी नामकरण पर मतैक्य नहीं मिलता, किन्तु अधिकांश विद्वान इसे वर्तमान विहार प्रान्त के अन्तर्गत ''आरा (भोजपुर) प्रमण्डल के 'भोजपुर' ग्राम से संबंद्ध बताते है– विहार प्रान्त के शाहाबाद जिले में बक्सर के पास भोजपुर परगना में 'पुराना भोजपुर' नामक ग्राम है। अब भोजपुर नाम '' नया भोजपुर'' और ''पुराना भोजपुर'' नामक पास–पास बसे ग्रामों के लिए व्यवहत होता है। यूं तो भोजपुरी लोक–साहित्य में चेतना के सभी स्वर दिखाई पड़ते है परन्तु भोजपुरी लोक–साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरों का विशिष्ट रंग दिखाई पड़ता है।

Keywords: *भोजपुरी, लोक–साहित्य, राष्ट्रीय चेतना।*

Article Publication

Published Online: 20-Feb-2022

***Author's Correspondence**

Dr Prashant Kumar Baudh

Assistant Professor, Shri Bhagwan Mahavir P.G. College, Pavanagar, Fazilnagar, Kushinagar

pkbaudh5@gmail.com

10.53573/rhimrj.2022.v09i02.010

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

शोध विस्तारः–

भोजपुर जो आज विहार राज्य का एक अंचल है, साहित्य, संगीत और कला का समृद्ध राज्य था। संभवतः यह क्षेत्र महाकवि कालिदास के आश्रयदाता, कवि कलाकारों के प्रेमी उज्जैन नरेश महाराज 'भोज' की बिहार–भूमि रहा है।। भोज वंशी राजाओं की यहां राजधानी (पुरी) रही है। उन्हीं के नाम पर भोजपुर और यहां की मातृभाषा भोजपुरी प्रसिद्ध है।[1]

भोजपुरी बोली का क्षेत्र 50 हजार वर्गमील में फैला हुआ है। यह उत्तर में नेपाल की तलहटी से लेकर दक्षिण में छोटा नागपुर के पठार तक पश्चिम में मिर्जापुर, बनारस तथा फैजाबाद की पूर्वी सीमा छूती हुई रांची–पलामू तक बोली जाती है इसके उत्तर में नेपाली, दक्षिण में उडिया तथा छत्तीसगढ़ी, पूरब में मगही तथा मैथिली और पश्चिम में अवधि तथा बघेली बोलियों का क्षेत्र है।

भोजपुरी का विस्तार क्षेत्र अधोलिखित प्रकार है–[2]

- पश्चिम विहार में स्थित– गोपालगंज, सिवान, छपरा, चम्पारन, भोजपुर, रोहतास, पलामू जिले तथा रांची जिले का पूर्वी–उत्तरी भाग।
- मध्य प्रदेश में स्थित जयपुर का क्षेत्र।
- पूर्वी उत्तर प्रदेश में बस्ती, गोरखपुर, महाराजगंज, सिद्धार्थ नगर, देवरिया, मऊ, बलिया, आजमगढ़, गाजीपुर, वाराणसी और मिर्जापुर जिले तथा जौनपुर, फैजाबाद, अम्बेडकर नगर जिलों के पूर्वी अर्द्ध भाग।

- नेपाल की तराई में स्थित बहराइच से लेकर चम्पारन तक सीमा से सटे अंचल।

भोजपुरी के उपर्युक्त प्रसार क्षेत्र में इस समय कई नये जिले भी बन गये है। भोजपुरी लोक कलाकार इतने जागरूक रहे है कि जहां भी गये लोगों को भोजपुरी बोलने के लिए ललचाते गये। भोजपुरी भाषा–भाषी भारत के हर प्रान्त में पाये जाते है। यहां की लोक गाथाऐं भारत ही नहीं विदेशों में भी गायी जाती है।

भोजपुरी क्षेत्र शिव और शक्ति का उपासक है किन्तु वैष्णव, बौद्ध, जैन, सिद्ध, सूफी और निरंकारी संत सबको समाहार देता है। ''भोजपुरी क्षेत्र में शैवों की काशी, भक्तों का विन्ध्याचल, वैष्णवों की अयोध्या और मथुरा स्थित है। यहां की भूमि पर सारनाथ जैसा पुण्य स्थल है, जहां से बुद्ध वचन के प्रसारण का मंत्र मिला था। काशी ही तीर्थकार पार्श्वनाथ की जन्म भूमि है यहीं चुनार से अशोक के शिलालेख तैयार कराये गये थे। यहां जौनपुर, गाजीपुर और सिकन्दरपुर जैसे स्थानों में सूफियों की बानिया लोकप्रिय हुई थी। इस धरती के कण–कण में देश का सांस्कृतिक वैभव विखरा पड़ा है।[3]

यहां चैत और आश्विन दोनों नवरात्रों में घर–धर जगदम्बा की पूजा की जाती है। रोग, शोक, भय, त्रासदी और पाप–ताप नाशिनी सातों बहनें शीतला सामान्य जन जीवन में विशेष समादृत है। महलों से झोपड़ियों तक यहां देव–घर (देवकुरी) मिलते है। प्रायः प्रत्येक अंचल में शिव–पार्वती के मंदिर पाये जाते है। महान देवी दुर्गा के मंदिर लगभग सभी गांवों में मिलते है।

भोजपुरी क्षेत्र के बाहर भी यह मुम्बई कोलकाता तथा आसाम के शहरों–जंगलों में निवास करने वाले लाखों लोगों द्वारा व्यवहृत होती है। इतना ही नहीं, अपने देश के बाहर मारिशस, फीजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिनाड, नेपाल आदि देशों में भी इसके बोलने वाले लोग बसे है।[4]

भोजपुरी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वरः

प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का आरम्भ सन् 1857 में हुआ। भोजपुरी क्षेत्र का नेतृत्व वीर कुँवर सिंह ने किया। इसी से इस युद्ध को जनता ने 'कुँवर की लडइया' कहा। विद्रोही सैनिकों के साथ बाबू कुँवर सिंह ने आरा पर धावा बोल दिया। अंग्रेज कप्तान ने कुँवर सिंह के यहां पत्र लिखा कि आप आईये! मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मैं आरा को प्रान्त बनाकर आपको वहां का राजा बना दूँगा, किन्तु कुँवर सिंह ने कहा कि जब तक प्राण रहेगा, तब तक मार्ग नहीं बदलूँगा। इससे उनका त्याग, उनकी देशभक्ति भावना प्रकट होती है जो यहां लोकगीतों में उद्धृत है–

''कप्तान लिखे मिलअ कुँवर सिंह, आरा के सूबा बनाइब रे।
तोहफा देबो, इनाम देबो, तोहके राजा बनाइब रे।
बाबू कुँवर सिंह भेजले सनेसवा, मोसे चली न चतुराई रे।
जब तक प्रान रहीं तन भीतर, मारग नाहीं बतलाई रे।।''[5]

इस प्रसिद्ध कविता में पहले अंग्रेजी राज्य के कारण देश की दुर्दशा का वर्णन किया गया है। इसके बाद जलियावाला बाग में अंग्रेजों के द्वारा किये गये भीषण हत्याकाण्ड का रोमांचकारी वर्णन किया गया है–

''सुन्दर सुधर भूमि भारत के रहे रामा,
आज इहै भइल मसान रे फिरगिया।
अन्न, धन, जन, बल, बुद्धि सब नाश भइल,
कवनों के ना रहल निसान रे फिरगिया।।[6]

असहयोग आन्दोलन के दिनों में महात्मा गांधी चतुःसूत्री कार्यक्रम का एक प्रधान अंग विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करना था। वे विदेशी कपड़ों की होली जलाकर चरखे से काते गये कपड़े–खद्दर के पहिनने पर बल देते थे। एक गीत में कोई स्त्री अपने पति से विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर खद्दर पहिनने के लिए प्रार्थना करती है–

''छोड़ि देहु वसन विदेसिया, नापहिरहु,
भारत वासिया हमार।।
चलिए गइले अन, धन सगरी विदेसवा,
देखहुँ, अखियां पसार।।

तानजेब, मलमल, अतलस, अद्धी,
सब दीजे तन से उतार।।
चरखा चलाई, घर में खद्दर बनावहु,
हो करके तइयार।।
सरम करहु, मति पहिरहु अब से
देसवा के सुनि के पुकार।।
भारत नइया परलवा मझ–धारवा में,
खेइके लगा देहु पार।।[7]

इस प्रकार विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए अपील की जाती थी, दुकानों पर विदेशी कपड़ा न बेचने के लिए पिकेटिंग की जाती थी तथा मादक द्रव्यों के व्यवहार न करने के लिए जनता से अपील की जाती थी, उन्हें इसकी बुराईयों के बारे में प्रेम पूर्वक समझाया जाता था।

किसी देश–भक्त स्त्री द्वारा अपने पति से चरखा लाने की प्रार्थना करना तथा उसे कातकर स्वराज्य प्राप्त करने का संदेश बड़ा ही मार्मिक है जिसका वर्णन लोकगीतों में मिलता है–

अब हम कातबि चरखवा, पिया मति जाहु विदेसवा।टेक।
हम कातबि चरखा सजन तुहु लाव,
मिलहि एही से सुरजवा।।
पिया मति0
होइहें सुराज जबे सुख मिलहें,
कटे जइहें सबके कलेसवा।। पिया मति0
कहता रे गांधी जी की चरखा चलावहु,
एही से हटिहे कलेसवा।।[8]

सत्याग्रहियों को जेल में अनेक कष्ट दिये जाते थे। उनके पैर में बेड़ी और हाथ में हथकड़ी पहिना दी जाती थी जिससे उनका चलना–फिरना कठिन हो जाता था। उन्हें जेल में चक्की में आटा पीसने के लिए दिया जाता था। उन्हें सोने के लिए चटाई और खाने के लिए मोटा अन्न दिया जाता था, जो मनुष्य के खाने योग्य नहीं होता था। इन्हीं कष्टों की संभावना करती हुई देश भक्त की धर्म पत्नी आशंकित होकर कहती है कि मेरा पति जेल में किस प्रकार होगा, किस प्रकार अपना दिन काटता होगा–

"रजऊ कइसे होइहे ना ।टेक।
ओ ही जे जेल के कोठरिया। रजऊ0
गोड़वा में बेडिया, हाथ में हथकड़िया,
रजऊ कइसे चलिहि ना।
बोझा गोड़वा में जताई। रजऊ0
घरवा में सइयां कुछ करते नाही रहले,
अटावा कइसे पीसिहें ना। रजऊ0
भारी जेहल के चकरिया,
रजऊ कइसे पीसिहें ना।
घर के जेवनवा उनुकरा नीको नाहीं लागें
उहवां कइसे खइहें ना,
जौ के रोटिया, घासि के सगवा उहवां कइसे खइहें ना।"[9]

इस वियोगिनी, देशभक्त, नारी की मनोव्यथा हृदय द्रावक है जो अपने पति के जेल में संभावित कष्टों की कल्पना कर, चिन्ता से गली जा रही है।

राष्ट्रीय चेतना में भाव साम्यः

राष्ट्रीयता मानव के अन्तःकरण की वह सर्वोत्म चेतना है जो उसे राष्ट्र के उत्कर्ष के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्रीयता की उत्पत्ति में अनेक तत्व सहायक होते है, जिसमें मुख्य है—राजनैतिक एकता, भावात्मक एकता, धार्मिक एकता, भाषायी एकता, आर्थिक एकता तथा राजनैतिक एकता। इसमें भावात्मक एकता सर्वोपरि है।

लोक साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना विभिन्न स्तरों पर पायी जाती है। हिन्दी क्षेत्र में व्यवहरित विभिन्न बोलियों के लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना की अभिव्यक्ति प्रमुखता से हुई है। इन बोलियों में व्यक्त राष्ट्रीय भावनाओं में समानता पायी जाती है। गांधी जी द्वारा देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने के प्रसंग को सभी प्रमुख बोलियों में उद्धृत किया गया है।

गांधी जी ने देशवासियों में आत्म गौरव, आत्म सम्मान तथा आत्म निर्भरता का भाव लाने के लिए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग करने का आह्वान किया, उन्होंने इसके लिए चरखा कातने तथा उसके सूत से बने वस्त्र पहनने हेतु भारतीवासियों को प्रेरित किया है।[10]

गांधी जी द्वारा चरखा कातने का प्रसंग अनेक बोलियों में एक जैसा पाया जाता है यथा—

भोजपुरीः
''छोडि देहु वसन विदेसिया, ना पहिरहु,
भारत वासिया हमार।।
चलि गइले अन, धन सगरी विदेसवा,
देखहुँ अखियां पसार।।[11]

निष्कर्षः

भोजपुरी का आधुनिक सहित्य तो किसी भी उत्कृष्ट साहित्य से टक्कर लेने की क्षमता रखता है। परदेशी पति के वियोग में सिसकती स्त्री की विरह वेदना को आधार बनाकर भिखारी ठाकुर द्वारा लिखा गया 'विदेशिया' नाटक भोजपुरी की अमूल्य थाती है। प्रसिद्ध गीतकार भोलानाथ 'गहमरी' के भोजपुरी काव्य—संग्रह 'अंजुरी भर मोती' के गीत 'कहीं भींजे न कजरा' में जीवन का जो दर्द है, उसकी तलाश अन्यत्र बहुत सरल नहीं है। भोजपुरी के स्थापित कलाकार मोती बी.ए. के लोक—संगीत संग्रह 'बन—बन बोले ले कोइलिया' से कोई भी भोजपुरी रसिक अपरिचित नहीं होगा। इसके अतिरिक्त रामनाथ पाठक 'प्रणयी', मुक्तेश्वर नाथ 'बेसुध', चन्द्रशेखर मिश्र, राघवेन्द्र प्रताप सिंह (महुवाबारी), रामवृक्ष राय 'विधुर' (झुरकि बहेना) तथा आकाशवाणी कलाकार गोपाल कृष्ण द्विवेदी (बंजि गइल बसुरी) आदि कवियों ने भी भोजपुरी साहित्यकी श्री वृद्धि की है। इसके अलावा भोजपुरी के विकास के लिए अनेक भोजपुरी—सेवी—संस्थाएँ बनाई गई है, यथा— भोजपुरी साहित्य परिषद, जमशेदपुर, बिहार (1960), भोजपुरी संसद, जगतगंज, वाराणसी (1964), भोजपुरी साहित्य मंदिर, जगतगंज, वाराणसी (1966) भोजपुरी—लोक—मंच, इलाहाबाद (1955) तथा भोजपुरी संस्थान,, नोखा, रोहतास (1985)। इसके अतिरिक्त कुछ पत्रिकाएँ भी भोजपुरी के प्रचार—प्रसार के लिए समय—समय पर प्रकाशित होती रही है, जैसे— भोजपुरी (मासिक), अँजोर (त्रैमासिक), पुरवैया आदि।

संदर्भ सूची—

1. हिन्दी भाषा—डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 75
2. उपरोक्त, पृ. 79
3. मैथिली भाषा का विकास— श्री गोविन्द झा, पृ. 04
4. भोजपुरी के कवि और काव्य—श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह (भूमिका भाग), पृ.06
5. उपरोक्त, पृ. 08
6. भोजपुरी लोक सहित्यः सांस्कृतिक अध्ययन—श्रीधर मिश्र, पृ. 227
7. चन्दन चौक (भोजपुरी लोकगीत)—श्री नमदिश्वर चतुर्वेदी, पृ. 404
8. उपरोक्त, पृ. 402
9. भोजपुरी लोकगीतों के विविध रूप— श्रीधर मिश्र, पृ. 155
10. भोजपुरी लोकगीत (द्वितीय भाग)—डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ. 336
11. उपरोक्त, पृ. 339